

एसेट आवंटन महत्वपूर्ण

अच्छी रिटर्न प्राप्त करने के लिए स्टॉक चुनने की बात महत्वपूर्ण होगी. अपने फंड में किसी प्रकार के महत्वपूर्ण कैश काल से बचना चाहिए. निवेशकों को चाहिए कि वह अगले 18-24 महीनों के लिए मल्टी एसेट क्लास रणनीति बनाएं. किसी भी एक एसेट वर्ग से जुड़ना महंगा साबित हो सकता है. एसआईपी एक एवरग्रीन रणनीति है और निवेशकों को उसका लाभ लेना चाहिए



नवीन सूरी, एमडी और सीईओ, आईएनजी इन्वेस्टमेंट मैनेजमेंट इंडिया

इस समय पिम्स देशों को अपनी उलझी बैलेंसशीट सुलझाने के लिए यूरोपीय यूनियन से लगभग एक ट्रिलियन अमेरिकी डालर की जरूरत रही जिससे आसन्न संकट को रोका जा सके. फिलहाल इस सुधारात्मक कदम के तहत जो सहयोग आया उससे सार्वजनिक और निजी खर्चों में कमी आएगी. लिहाजा मध्यम अवधि में यूरो जोन में ग्रोथ कमजोर रहने वाली है. इसके कारण संकट के बादल टले हैं और हम मानते हैं कि मार्केट में उठापटक चलने वाली है.

करेक्शन को देखें तो सेंसेक्स वर्तमान स्तर पर 15 से 15.5 गुने पर कारोबार कर रहा है, जो एक वर्ष फावर्ड पर आधारित है. यह ऐतिहासिक औसतों की तर्ज पर है. हमें लगता है कि वैश्विक अनिश्चितताओं के चलते जो पीई री-रेटिंग ऊपर की ओर होनी चाहिए थी वह नीचे है. लिहाजा इक्विटी मार्केट की रिटर्न अर्निंग ग्रोथ के समानांतर रहने वाली है.

महंगे वैल्यूएशन और वैश्विक अनिश्चितताओं के चलते मेटल सेक्टर कमजोर रहा है. इस सेक्टर के कमजोर प्रदर्शन और मार्केट तथा वर्तमान बाजार में आई गिरावट के कारण कुछ चुनिंदा कंपनियों की वैल्यूएशन आकर्षक हो गई है. हम इस सेक्टर में निवेश बढ़ा सकते हैं.

पिछले 18 महीनों में ढांचागत इश्यू की

स्थिति इक्विटी नेट फ्लो में उतार चढ़ाव भरी रही है. फिलहाल निवेशकों को म्यूचुअल फंडों की जरूरत है और उन्हें बने रहना है. हाल के इक्विटी एनएफओ में आई तेजी ने धारा को उद्योग के पक्ष में मोड़ दिया है. वितरक व्यवसाय करना चाह रहे हैं, छोटे निवेशक अभी मार्केट को निचले स्तर पर मान रहे हैं और उत्पादक भी धीरे-धीरे मगर निश्चित तौर पर नए नियमों को स्वीकार रहे हैं.

अनिश्चित समय जोखिम का प्रबंधन करना भी रिटर्न के प्रबंधन की तरह जरूरी हो जाता है. सर्वोपरि बात यह है कि एसेट एलोकेशन आज ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है. पहले के अध्ययनों से पता चलता है कि निवेशक के पोर्टफोलियो की 90 प्रतिशत ग्रोथ अच्छे एसेट एलोकेशन से होती है, जबकि शेष 2 प्रतिशत मार्केट के समय से.

इसलिए पहले हमें एसेट एलोकेशन की अपेक्षा करनी चाहिए. दूसरे अच्छे एसेट आबंटन के साथ ही स्थिरता का भी ध्यान रखना चाहिए जिसमें पोर्टफोलियो में झटकों के सहने की ताकत रहे. तीसरे एक सक्रिय प्रबंधन की रणनीति रहे. इससे पोर्टफोलियो को तुरंत हुए परिवर्तनों को झेलने की क्षमता मिलेगी. सबसे महत्वपूर्ण बात अनुशासित और गैरभावक रहने वाली है साथ ही अनमने निर्णय लेने से बचें.

हम उपभोक्ता के विवेकाधिकारों से जुड़े सेक्टरों के लिए सकारात्मक हैं (विशेषकर 2 पहिया वाहन और आटो क्षेत्र). साथ ही औद्योगिक सेगमेंट को लेकर भी खासकर कांस्ट्रक्शन. इसी तरह पीएसयू बैंक को लेकर भी हम सकारात्मक हैं जिन्होंने प्राइवेट सेक्टर के खिलाड़ियों की तुलना में अच्छा वैल्यूएशन दिया है. ऑयल एंड गैस की अपस्ट्रीम व डाउनस्ट्रीम कंपनियों की स्थितियां अच्छी हैं. हम मेटल्स, एफएमसीजी और यूटीलिटीज में पीछे हैं. मेटल स्टॉक में उपयुक्त करेक्शन के बाद हम इस सेक्टर में प्रवेश कर सकते हैं.

अच्छी रिटर्न प्राप्त करने के लिए स्टॉक चुनने की बात महत्वपूर्ण होगी. सेक्टर एलोकेशन के लिए हमें अल्फा जोड़ने पर भी ध्यान देना चाहिए. अपने फंड में किसी प्रकार के महत्वपूर्ण कैश काल से बचना चाहिए. निवेशकों को चाहिए कि वह अगले 18-24 महीनों के लिए मल्टी एसेट क्लास रणनीति बनाएं.

किसी भी एक एसेट वर्ग से जुड़ना महंगा साबित हो सकता है. एसआईपी एक एवरग्रीन रणनीति है और निवेशकों को उसका लाभ लेना चाहिए.

(लेखक के विचारों से दलाल स्ट्रीट इन्वेस्टमेंट जर्नल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)